कृषि विकास

डॉ. रमा एस. चौहान
वाणिज्य विभाग
भवभूति महाविद्यालय,
टामगांव जि.गोंदिया (महाराष्ट्र)
पिन कोड — ४४१९०२
मो.नं. — ९४०३६१६९२९
ई—मेल — drramachauhan@gmail.com

प्रस्तावना :—

आधुनिक सभ्यता का विकास अपने आप ही नही होता है । इस सभ्यता को विकसित करने का कार्यक्रम अविरत मानविय प्रयत्नो को जाता है । जिनके द्वारा मनुष्य अधिकाधिक सुविधाजनक जीवन की ओर अग्रेसित हुआ है । आज का मानव मष्तिष्क संहार के साधनो की खोज के माध्यम से मृत्यु के द्वार पर निरेतर दस्तक देने का प्रयास कर रहा है । ज्ञान—विज्ञान की उपलब्धियॉ, अस्त्रशस्त्र के निर्माण पर केंद्रित हो गई है और वह ऐ ऐसे विकास की ओर अग्रेसर हो रहा है जिसमें उसे स्वयं की आहुती भी देनी पड़ सकती है ।

सभ्यता की प्रारभिक स्थिती में परिस्थिती बिल्कु विपरित थी । यह वह समय था जब मनुष्य को अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए हर पल संघर्ष करना पड़ता था । उसका ज्ञान जीवन के सुचा खोजता था । उसके निधान को जिवित रहने की तलाश थी । कृषि मानवीय ज्ञान और विज्ञान उसी जीवनदायी खोज का प्रतिफल है ।

मानव को भूमी से उपज लेने की कला कब प्राप्त हो गई ? किस प्रकार उसे खेती का ज्ञान एवं विज्ञान समझ में आया ? उसके कोई निश्चित ठोस प्रमाण उपलब्ध नही है । कदाचित वनों का घास के प्रदेशों पर पशु चराते हुए उसे यह ज्ञात हुआ की घास और पौधो पर तो बीज लगते है । तदुपरांत अपने रहने के स्थान या झोपडीयों के पास बीज बोकर खाद्यान्न उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जिसमें उसे सफलता मिली । पशुओं के लिए चारगाह की खोज में घुमते हुए शायद उसे ज्ञात हुआ हो की किसी उपयुक्त पोषण के लिए चारा क्यों न उत्पन्न किया जाय ? इसप्रकार उसने ञ्रगली घासें और पौधो के बीजों को एकत्रित कर बोना प्रारंभ किया । इसप्रकार प्राचीण विवरणों से ज्ञात होता है की पॉच हजार वर्ष पूर्व भी संसार के कुछ भागों में

खेती की जाती थी । भारत के विशेष संदर्भ मे इसाकाल के पूर्व कृषि के क्रमिक विकास को पाषण युग अर्थात एक लाख वर्ष पूर्व जब मानव का उद्‌भव हुआ था ।

कृषि से आशय :—

कृषि शब्द की उत्पत्ती लॅटिन भाषा के दो शब्दो एगर + कल्चर से हुई है । जिसका अर्थ खेती करना एवं उससे उत्पन्न संस्कृति से है । प्रारम्भ मे कृषि शब्द का उपयोग खाद्यान्न उत्पादन के लिए किया जाता था । धीरे—धीरे इसका क्षेत्र विकसित होता गया । अब का अर्थ भूमी की जुताई से संबंधित मनुष्य की समस्त आर्थिक क्रियाओं तथा उन क्रियाओं से है जो प्रत्यक्ष एवे परोक्ष रूप से मिट्‌टी पर आधारीत है । प्रो.ई.ओ. हेड़ि ने कृषि अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है की “कृषि उत्पादन विज्ञान का एक व्यावहारीक क्षेत्र है जिसमें चयन के सिद्धांतो को खेती बाड़ी के उद्योगो में पूंजी, आय, भूमी और प्रबध के प्रयोग के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।”

कृषि प्रबंध के क्षेत्र मे न केवल लहलहाती फसले और संवर्धन भंडार तथा पशुध नही आता है वरन इसके अन्तर्गत कृषक की वे समस्त क्रियाए सम्मिलित है जो भूमि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई होती है । कृषि भूमि से संबंधित ऐसी कला और विज्ञान है जिसमें सभी क्रियाए उद्‌देश्यपूर्ण होती है । भूमि से अनाज पैदा करने का विज्ञान ही कृषि है ।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व :—

कृषि राज्य की समस्त सम्पत्ती तथा समस्त नागरिकों के धन का स्त्रोत है । अत: कृषि के लिए लाभप्रद नितीही सरकार व राष्ट्र के अनुकुल एवं व्यवहार्य होगी । फेने का यह कथन भलेही डॉ.एडस्मिथ के विरोध का कारण बना हो लेकिन भारतीय संदर्भ में यह पूर्णत: सत्य प्रतीत होता है । वास्तव में हजारों वर्षो से कृषि का भारत से घनिष्ठ संबंध रहा है । यहॉ खेती के बारे में लोगो का दृष्टिकोण यह था की उत्तम खेती के मध्यम रोजगार, नीच चाकरी और भीख । इस संदर्भ में लार्ड मेयो का यह कथन भी उल्लेखनीय है की आनेवाली पिढ़ीयो तक भारत मे धन और सभ्यता का विकास भारत के कृषि विषयक उन्नती पर भी निर्भर रहेगा । संसार में संभवत: ऐसा कोई देश नही है जहॉ कृषि का घनिष्ठ और तात्कालिक संबंध हो जितना कि भारत में है ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी कहा की यदी भारत को सुदृढ बनाना है तो हमे कृषि को अपने विकास की मुख्य आधारशिला मानने मे ही भारतीय समाजवाद का बीजारोपण हो सकता है ।

कृषि विकास की समस्या :—

कृषि के महत्व को राष्ट्रीय तथा प्रांतीय दोनों ही अर्थव्यवस्था में स्वीकार किया जाता है । कृषि हमारे राष्ट्र का न केवल प्राचीनतम व्यवसाय रहा है वरन लगभग ७० प्रतिशत जनसंख्या के जीवन का आधारभूत साधन रहा है । महाराष्ट्र के कुल भू—भाग के ८० प्रतिशत भाग पर खेती होती है । तथा ८५ प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि कार्यो पर निर्भर है । राज्य में १४१४२७० व्यक्तियों का व्यवसाय कृषि है और ४८५७८२९ व्यक्ति कृषि मजदूरी के कार्य में संलग्न है । विश्व के अन्य राष्ट्रों में कृषि को सहायक व्यवसाय के रूप में फिर भी भारतीय कृषि अन्य राष्ट्रों की तुलना में पिछड़ी हुई है ।

भारतीय एवं राज्य की कृषि की दयनीयता का कोई एक कारण नहीं बल्कि अनेकानेक कारणों से यह स्थिति विद्यमान है । इन अनेक कारणों में प्रमुख रूप से प्रति हेक्टेयर न्यूनतम उत्पादकता, भूमि पर जनसंख्या का उत्तरोत्तर कढ़ता भार, भूमि का असंतुलित वितरण, जोतों का छोटा आकार, उपविभाजन एवं उपखंडन, उन्नत बीज, उर्वरक तथा सिंचाई साधनों का अभाव, कृषि साख विपणन एवं उपकरण की नवीन तकनीक का अभाव, भूमि स्वामित्व का दोषपूर्ण ढॉचा, कृषि कीमतों में उच्चावचन, भू—क्षरण, पशुओं की हीनावस्था आदी है ।

कृषि विकास हेतु किए जा रहे प्रयास :—

महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है । ६१.१ लाख परीवार जिनके पास २१९.३ लाख हेक्टर भूमि है कृषि पर आधारीत है । कृषि श्रमिकों सहित राज्य की ८० प्रतिशत जनसंख्या की जीवीका का आधार है । कृषि के सर्वांगीण विकास से ही कृषि पर निर्भर जनसंख्या का आर्थिक विकास संभव है ।

विगत वर्षो में महाराष्ट्र में जहॉ एक ओर अनाज, दलहनों, तिलहनों के उत्पादन में वृद्धि हुई है । वही प्रति हेक्टर औसत उत्पादन में वृद्धि हुई है । राज्य में कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सघन प्रयास किए जा रहे है ।

वर्तमान युग में कृषि केवल जीवन यापन का एक साधन मात्र ही नही रह गयी है । बल्कि औद्योगीक विकास का एक माध्यम तथा किसानों की समृद्धि का एक आधार बन गई है । इससे कृषि विपणन का का महत्व भी बहुत बढ़ गया है । उचित कृषि विपणन से एक ओर तो उचित मूल्य के प्रोत्साहन में किसान उत्पादन में वृद्धि कर विपणन योग्य आधिक्य के प्राप्ती का प्रयास करेगा । जिसके फलस्वरूप खाद्याानें की कमी दूर होगी और साथ ही साथ विविध उद्योगों के लिए कच्चे माल की पूर्ती बढ़ेगी और इसके साथ, औद्यौगीकरण की उत्पाद की मॉग भी बढ़ेगी । अत: किसानों के जीवनस्तर में सुधार होने के साथ—साथ औद्योगीकरण की गति भी बढ़ेगी ।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए निम्नलिखित कारणों से कृषि विपणन का महत्व और भी अधिक है ।

१) उत्पादन की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए विपणन अनिवार्य है ।
२) ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि विपणन आवश्यक है ।
३) खाद्य पदार्थो की मॉग की पूर्ति करना ।
४) कच्चे माल की पूर्ति को सुनिश्चित करना ।
५) पूँजी का निर्माण करना ।
६) नियोजन की प्रक्रिया में उपयुक्त होने के लिए उचित विपणन की आवश्यकता होती है ।
७) विदेशी मुद्रा का अर्जन करना ।
८) कुषको की क्रय शक्ति में वृद्धि करना ।

उपसंहार :—

आधुनिक सभ्यता का विकास अपने आप ही नही हुआ है बल्कि इस सभ्यता को विकसित करने का कार्यक्रम अविरत मानवीय प्रयत्नो को जीता है । जिनके द्वारा मनुष्य अधिकाधिक सुविधाजनक जीवन की ओर अग्रेसर हुआ है । कृषि विकास के साथ ही हमारी सभ्यता व संस्कृति का सुदृढ आधार है ।

कृषि शब्द की उत्पत्ती लॅटिन भाषा के दो शब्द एगर + कल्चर से हई है, जिसका अर्थ खेती करना एवं उससे उत्पन्न संस्कृति से है । कृषि राज्य की समस्त संपत्ती एवं समस्त नागरीको के धन का स्त्रोत है । अत: कृषि राज्य के लाभप्रद निती ही सरकार व राष्ट्र के अनुकुल एवं व्यवहार्य होगी ।

भारत में अतिप्राचीन काल से कृषि क्रियाये होती थी तथा कृषि व्यवसाय यहॉ का प्रमुख व्यवसाय रहा है । भारत मे स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात नियोजित आर्थिक विकास के साथ कृषि के व्यवस्थित एवं समयानुकुल विकास के प्रयास किये गये । पंचवर्षिय योजना के आधार पर कृषि विकास हेतु नवीन निती अपनाई गई जिसके परिणामस्वरूप देया में हरित क्राती दृष्टिगत हुई ।

वर्ष २००० और २१ वी शताब्दि में पदार्पण करते समय राष्ट्र के लिए कृषि विकास के लक्ष्य रखे गये । उनके अनुरूप ही योजनाओं में पूँजी नियोजन तथा निती संबंधो कार्यक्रम की व्यवस्था करनी होगी ताकी शताब्दि के अंत तक कृषि क्षेत्र में पूर्णतया आत्मनिर्भरता की स्थिती प्राप्त की जा सकेगी ।

संदर्भ ग्रथ :—

- पी.सी. जैन, भारत के कृषि विकास, मध्यप्रदेश हिन्दी एकादमी, भोपाल — १९९२
- डॉ.आर.एल. कोहते, कृषि अर्थशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी एकादमी, भोपाल — १९९५
- डॉ.व्हि.सी. सिन्हा, भारतीय अर्थव्यवस्था विकास संगठन, लोकभारती, इलाहाबाद— १९७८
- जी.पी. जाथर, भारतीय अर्थव्यवस्था, राजकमल प्रकाशन — १९८५
- डॉ.प्रकाश जैन, आर्थिक निती और विकास, काले बुक डेपो, जयपुर — १९८८